भारतीय संस्कृति के संवाहक बनें शिक्षक : राष्ट्र संत आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज

एक शिक्षक में शिष्टचार क्षमाभाव और कर्तव्य निष्ठा होना चाहिए : ब्र. अनिता दीदी

विशाल जैन पवा, ललितपुर। शिक्षक का कार्य विषय-शिक्षण तक सीमित नहीं हैं, अपितु वह अपने आचरण के द्वारा छात्रों में मानवता का निर्माण कर सकते हैं। चारित्र का विकास, व्यक्तित्व का गठन और जीवन निर्माण एक सच्चा शिक्षक ही कर सकता हैं उक्त विचार सराकोद्धारक राष्ट्र संत आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने क्षेत्रपाल जैन मंदिर में शिक्षकों की कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहे। उन्होंने कहा कि वर्तमान की शिक्षा केवल रोजगार के लिये होती हैं लेकिन वह बेरोजगार ज्यादा बनाती हैं। जिस शिक्षा से जीवन का समुन्नत विकास हो सकता हैं वह केवल आजीविका व स्वप्न दिखाती हैं, शिक्षा का उद्देश्य अर्थोपार्जन तक सीमित हो गया हैं जिस कारण वर्तमान पीढ़ी संस्कृति से विमुख हो रही हैं। आवश्यकता हैं कि शिक्षक स्वयं चरित्रवान बने और भारतीय संस्कृति के संवाहक भी बनें। आचार्यश्री ने अपने मार्गदर्शी व्याख्यान में वर्तमान शिक्षा पद्धति, संस्कारों का अभाव, नैतिक शिक्षा का विलोपीकरण, संस्कृति ज्ञान का अभाव, शिक्षकों का चारित्रिक अवमूल्यन, गैर जिम्मेदारी पूर्ण शिक्षण के बारे में गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि जब विपरीत परिस्थितियाँ हों ऐसी स्थिति में शिक्षक का दायित्व ओर बढ़ जाता हैं। शिक्षक ईमानदारी, कर्तव्य निष्ठा का प्रमाण बनें। अनेक संस्मरणों, उदाहरणों से आचार्यश्री ने शिक्षकों को मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने कहा कि शिक्षक का दायित्व केवल क्लासरूम तक ही नहीं सिमटता बल्कि यह दायित्व बालकों/छात्रों के व्यक्तित्व के विकास और चरित्र निर्माण का भी एक अहम हिस्सा होता हैं। अंततः यह कहना अतियुक्ति नहीं होगी कि वर्तमान युग में शिक्षक छात्र/छात्राओं के सक्षम मार्गदर्शक होने के साथ ही देश के भाग्य विधाता और भविष्य निर्माता भी हैं। शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूज्यनीय रहा हैं। कोई उसे 'गुरु' कहता हैं, कोई 'शिक्षक' कहता हैं, कोई 'आचार्य' कहता हैं, तो कोई 'अध्यापक' या 'टीचर' कहता हैं। ये सभी शब्द एक ऐसे व्यक्ति को चित्रित करते हैं, जो सभी को ज्ञान देता हैं, सिखाता हैं और जिसका योगदान किसी भी देश या राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करना हैं। सही मायनों में कहा जाए तो एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थी का जीवन गढ़ता हैं और शिक्षक ही समाज की आधारशिला हैं। एक शिक्षक अपने जीवन के अंत तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता हैं और समाज को राह दिखाता रहता हैं तभी शिक्षक को समाज में उच्च दर्जा दिया जाता हैं। शिक्षक को 'समाज का शिल्पकार' कहा जाता हैं। आचार्यश्री आगे कहते हैं कि गुरु या शिक्षक का संबंध केवल विद्यार्थी को शिक्षा देने से ही नहीं होता बल्कि वह अपने विद्यार्थी को हर मोड़ पर राह दिखाता हैं और उसका हाथ थामने के लिए हमेशा तैयार रहता हैं। विद्यार्थी के मन में उमड़े हर सवाल का जवाब देता हैं और विद्यार्थी को सही सुझाव देता हैं और जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदा प्रेरित करता हैं। सफल जीवन के लिए शिक्षा बहुत उपयोगी हैं, जो हमें गुरु द्वारा प्रदान की जाती हैं। शिक्षक अपने शिक्षार्थी को ज्ञान देने के साथ साथ गुणवत्ता युक्त शिक्षा भी देते हैं, जो कि एक विद्यार्थी में उच्च मूल्य स्थापित करने में बहुत उपयोगी हैं। किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता हैं। अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी हैं तो उस देश को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी नहीं होगी तो वहां की प्रतिभा दबकर रह जाएगी। उन्होंने कहा कि एक शिक्षक द्वारा दी गई शिक्षा ही शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का मूल आधार हैं। प्राचीनकाल से आजपर्यंत शिक्षा की प्रासंगिकता एवं महत्ता का मानव जीवन में विशेष महत्व हैं। शिक्षकों द्वारा प्रारंभ से ही पाठ्यक्रम के साथ ही साथ जीवन मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती हैं। शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहारकुशलता और योग्यता प्रदान करती हैं। आचार्यश्री कहते हैं आज भी बहुत से शिक्षक, शिक्षकीय आदर्शों पर चलकर एक आदर्श मानव समाज की स्थापना में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। लेकिन इसके साथ साथ ऐसे भी शिक्षक हैं, जो शिक्षक और शिक्षा के नाम को कलंकित कर रहे हैं और ऐसे शिक्षकों ने शिक्षा को व्यवसाय बना दिया हैं जिससे एक निर्धन शिक्षार्थी को शिक्षा से वंचित रहना पड़ता हैं और धन के अभाव से अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। शिक्षक वह पथ-प्रदर्शक होता हैं, जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाता हैं। आज के समय में शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण हो गया हैं। शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण देश के समक्ष बड़ी चुनौती हैं। पुराने समय में भारत में शिक्षा कभी व्यवसाय या धंधा नही थी। इससे वर्तमान छात्रों को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षक ही भारत देश को शिक्षा के व्यवसायीकरण और बाजारीकरण से स्वतंत्र कर सकते हैं। देश के शिक्षक ही पथ-प्रदर्शक बनकर भारत में शिक्षा जगत को नई बुलंदियों पर ले जा सकते हैं। आचार्यश्री ने कहा कि गुरु एवं शिक्षक ही वो हैं, जो एक शिक्षार्थी में उचित आदर्शों की स्थापना करते हैं और सही मार्ग दिखाते हैं। एक शिक्षार्थी को अपने शिक्षक या गुरु के प्रति सदा आदर और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। किसी भी राष्ट्र का भविष्य निर्माता कहे जाने वाले शिक्षक का महत्व यहीं समाप्त नहीं होता, क्योंकि वे न सिर्फ हमको सही आदर्श मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं बल्कि प्रत्येक शिक्षार्थी के सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती हैं। किसी भी देश या राष्ट्र के विकास में एक शिक्षक द्वारा अपने शिक्षार्थी को दी गई शिक्षा और शैक्षिक विकास की भूमिका का अत्यंत महत्व हैं। उन्होंने शिक्षकों से अपेक्षा की कि वह कमजोर, असहाय वर्ग के बच्चों को अपनी ओर से निःशुल्क सेवाएं देने के लिए तत्पर रहें।

इस अवसर पर शिक्षक सतेन्द्र जैन गदियाना, शिक्षक शीलचंद्र जैन शास्त्री, एबीआरसी श्रीमती दीप्ति जैन, शिक्षिका अमृता लोहिया, जितेन्द्र जैन, अंतिम जैन, विशाल जैन, पुष्पेन्द्र जैन,

अभिषेक जैन मोना आदि शिक्षकों ने अपने अमूल्य सुझाव और विचार रखे तथा अपने अनुभव साझा किए। प्रखर वक्ता ब्र. अनिता दीदी ने आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज के महनीय अवदान को बताते हुए कहा कि तनावों से मुक्ति कैसे हो, व्यसन मुक्त जीवन कैसे बने, पारिवारिक संबंधो में सौहार्द कैसे स्थापित हो तथा शाकाहार को जीवन शैली के रूप में कैसे प्रतिष्ठापित किया जाये आदि यक्ष-प्रश्नों को बुद्धिजीवियों, प्रशासकों, पत्रकारों, आधिवक्ताओं,शासकीय, अर्द्ध शासकीय व निजी क्षेत्रों के कर्मचारियों व आधिकारियों, व्यवसायी, छात्रों-छात्राओं आदि के साथ परिचर्चाओं, कार्यशालाओं, गोष्ठियों के माध्यम से उत्तरित कराने के लिए एक ओर एक रचनात्मक संवाद स्थापित किया तो दूसरी ओर श्रमण संस्कृति के नियामक तत्वों एवं अस्मिता के मानदंडों से जन-जन को दीक्षित कर उन्हें जैनत्व की उस जीवन शैली से भी परिचित कराया जो उनके जीवन की प्रामाणिकता को सर्वसाधारण के मध्य संस्थापित करती है।

नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देता हैं। उन्होंने कहा एक शिक्षक में शि से शिष्टाचार, क्ष से क्षमाभाव और क से कर्तव्य निष्ठा होना चाहिए। इस अवसर पर संचालन करते हुए डॉ. सुनील संचय ने कहा कि पूज्य आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज यह जानते हैं कि एक शिक्षक सब कुछ कर सकता हैं, राष्ट्र की तस्वीर व तकदीर एक शिक्षक बदल सकता हैं। यही कारण हैं कि आचार्यश्री अनेकानेक सम्मेलनों में शिक्षक सम्मेलन को ज्यादा महत्व प्रदान करते हैं। आचार्यश्री के सान्निध्य में अनेक स्थानों पर शिक्षक सम्मेलन स्थानीय, जिला, मण्डलीय, प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर हो चुके हैं, जिनकी अनूठी उपलब्धियां भी रही हैं। आचार्यश्री ज्ञानसागर जी का चिंतन फलक देश, काल, सम्प्रदाय, जाति, धर्म, सबसे दूर प्राणिमात्र को समाहित करता है, एक युग बोध देता है, नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देता हैं। इस अवसर पर सरस्वती विद्या मंदिर, माहेश्वरी एकेडमी, शांतिसागर प्रायमरी स्कूल, प्रशांति विद्या मंदिर, दिगम्बर जैन सुधासागर इंटर कालेज, सिद्धि सागर, स्याद्वाद बाल संस्कार केंद्र, वर्णी जैन इंटर कालेज, बेसिक शिक्षा विभाग, माध्यमिक शिक्षा विभाग में कार्यरत सैकड़ो शिक्षक-शिक्षिकाएं प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। संचालन डॉ.सुनील संचय ने किया। आभार जैन पंचायत के चुनाव अधिकारी सतेन्द्र जैन गदियाना ने व्यक्त किया। स्वागत अक्षय अलया ने किया।

32 साल बाद आचार्यश्री का पपौराजी में भव्य मंगल प्रवेश

विशाल जैन पवा। टीकमगढ़। वीर बुंदेलखण्ड में मध्य प्रदेश की पावन धरा पर स्थित श्री 1008 अतिशय क्षेत्र पपौराजी में राष्ट्रसंत शिरोमणि 108 आचार्य प्रवर श्री विद्यासागरजी महाराज का ससंघ मंगल प्रवेश प्रातःकाल की बेला में हुआ। जिसके लिए क्षेत्र प्रबंध समिति ने भव्यता के साथ अगवानी की तैयारियाँ पहले ही पूर्ण कर ली थी। आचार्य श्री ससंघ विहार करते हुए सोमवार को घुवारा, मंगलवार को सिद्ध क्षेत्र फलहोड़ी बड़ागांव एवं बुधवार को ग्राम समर्रा पहुँचे तो भारी संख्या में धर्मावलंबियों ने आहार चर्चा में पुण्यार्जन किया एवं विहार में दर्शनों का लाभ लिया। किसी ने सच ही कहा है कि "जिनके दर्शन को पाकर के खिलती मुरझाई हृदय कली" जो सभी जैन और जैनेत्तर श्रद्धालुओं के मन में चरितार्थ हुई। ग्राम समर्रा में आचार्य श्री के चरण पड़ते ही भारी अतिशय देखने को मिला, मंदिरजी में तीन माह से सूखे पड़े कुएं में अचानक पानी आना शुरु हुआ जो गुरुवार को तीन फुट हो गया जिसका उपयोग सभी चौकों में आहार व्यवस्था के लिए किया गया। जिसे देखकर सभी धर्मावलंबी हतप्रभ रह गये एवं ऐसा अद्भुत दृश्य देखकर उन्हे अत्यंत खुशी हुई। सायंकाल आचार्य श्री का मंगल विहार पपौराजी की ओर हुआ तो ससंघ कदम ग्राम पठा में रात्रि विश्राम के लिए रूके। सुबह राष्ट्रसंत आचार्य प्रवर विद्यासागरजी महाराज का ससंघ मंगल प्रवेश अतिशय क्षेत्र पपोराजी में भव्य जुलूस के साथ हुआ एवं यह दिन टीकमगढ़ जिला के लिए स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जावेगा। पपोराजी में आज अब तक का सबसे बड़ा इतिहास रचा गया। लगभग साढे चार किमी लम्बी शोभा यात्रा में देश भर के करीब 1लाख श्रद्धालु शामिल हुए। भक्तो का सैलाब इस कदर था कि सब ओर, कोई और छोर दिखाई ही नही दे रहा था।

* पूज्य आचार्यश्री जी के मंचासीन होते ही बाल ब्र. श्री सुनील भैयाजी इन्दौर द्वारा बड़ी ही कुशलता से बोलियाँ प्रारंभ की गई। देखते ही देखते पाद प्रक्षालन की बोली 100-100 कलश पार कर गई। * इसके अलावा भी कई बोलियाँ लगाई गई जो अभूतपूर्व थी। सहस्त्रकूट जिनालय में स्थापित होने बाली दो प्रतिमाओं के अनावरण भी सम्पन्न हुए। * **बनेगा सहस्त्र कूट जिनालय-** पपोराजी में बनने वाले इस भव्य जिनालय का निर्माण स्वर्ण वर्ण के पीले पत्थर से किया जावेगा। इस जिनालय के सम्पूर्ण रूप से निर्माण के पुण्यशाली पून्यार्जक बनने का सौभाग्य प्राप्त किया श्रेष्ठी श्री राजा जैन कारी परिवार टीकमगढ़ (अनुमानित निर्माण लागत 700 कलश)। प्रतिभा स्थली के निर्माण को मिली स्वीकृति हुई घोषणा। पूज्य आचार्यश्री का ड्रीम प्रोजेक्ट कहे जाने वाले शिक्षा और संस्कार प्रदान करने हेतु भारत की चौथी और मप्र की दूसरी प्रतिभा स्थली पपोराजी में प्रारंभ करने की घोषणा आज कर दी गई। प्राप्त जानकारी अनुसार इसी वर्ष 108 बेटियों के प्रवेश के साथ एक नव निर्मित अन्य भवन में प्रतिभा स्थली प्रारंभ कर दी जावेगी। प्रतिभा स्थली हेतु अपने प्रथक भवन का शिलान्यास भी अतिशीघ्र होने जा रहा हैं। यह भवन लगभग एक वर्ष में तैयार हो जावेगा।